वर्ष - 1, अंक-4, दिसम्बर 2014

गौरैया

पर्यावरण एवं वन विभाग का मासिक मुखपत्र

बिहार सरकार

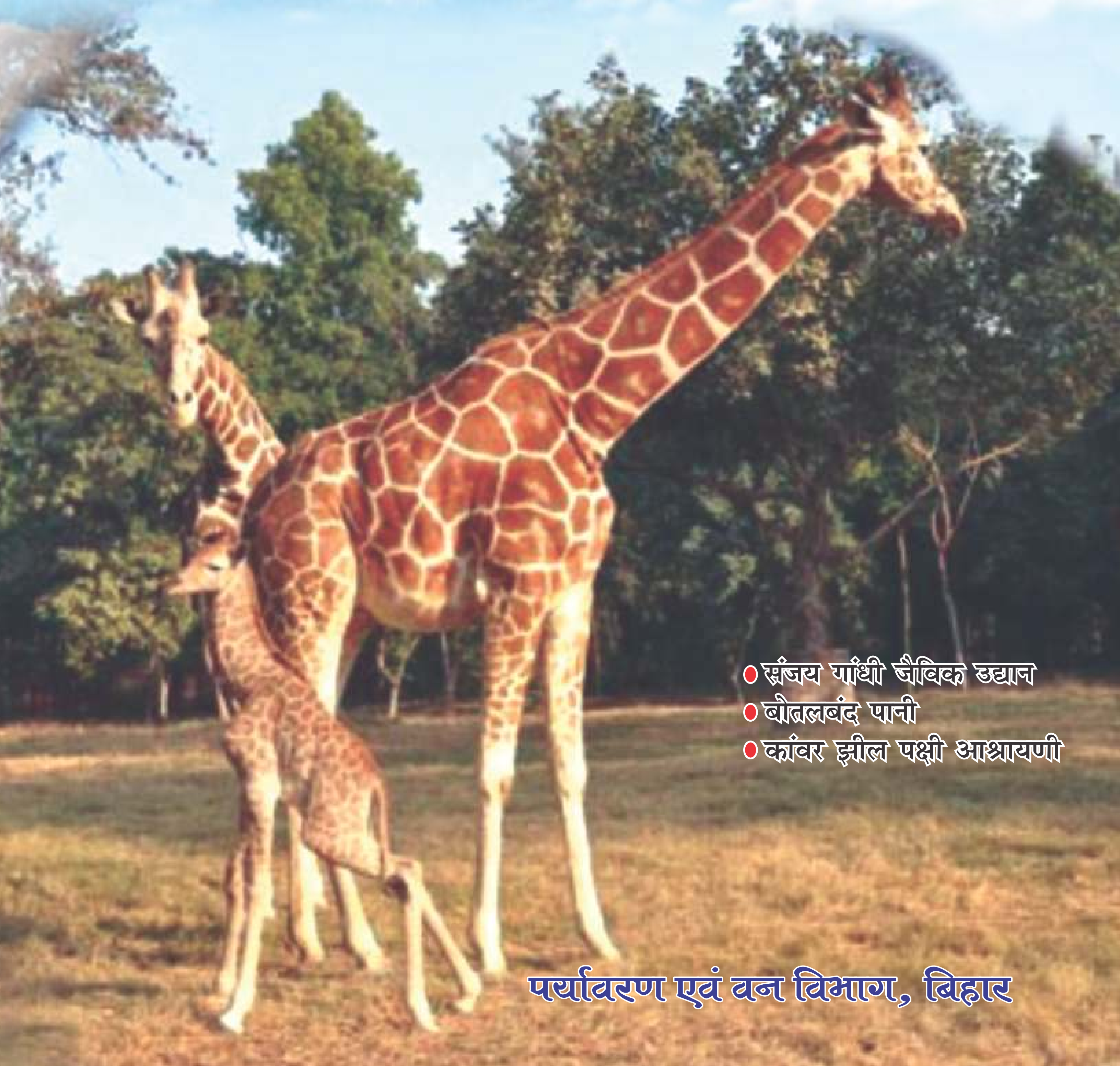

- संजय गांधी जैविक उद्यान
- बोतलबंद पानी
- कांवर झील पक्षी आश्रायणी

पर्यावरण एवं वन विभाग, बिहार

बिहार के कृष्णमृग

कृष्णमृग या काला हिरन बहुसिंघा प्रजाति को अंग्रेजी में "ब्लैक बक" एवं विगयन विज्ञान में एंटीलोप सर्विकाप्रा के नाम से जाना जाता है। यह भारतीय उपमहाद्वीप के भारत, नेपाल, बंगलादेश एवं पाकिस्तान में पायी जाती है। इस प्रजाति को बिहार में काला हिरन या कृष्णमृग (ब्लैक बक) के नाम से जाना जाता है। बस्तुत: यह राजस्थान राज्य का प्राणी है। राजस्थान के बिश्नोई लोग इसकी संरक्षण के लिए मशहूर हैं। इसको वहाँ के किसानों द्वारा बड़ी इज्जत की जाती है। यह हिमालय की तराई से लेकर आसाम, पंजाब, ओड़ीशा, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा, गुजरात, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु तथा कर्नाटक में भी मिलता है लेकिन कुछ जसंख्या मध्य भारत में भी है। यह भारत के संरक्षित क्षेत्रों में मिलता है। एक प्रभावी पुरुष कृष्णमृग की देखरेख में 5 से 50 की संख्या में कृष्णमृग रहते हैं। आहार घास, फल एवं फूल हैं, यानी यह शाकाहारी जानवर है। इसकी उम्र लगभग 16 वर्ष होती है। अपने देश में काला हिरण धार्मिक आस्था से भी जुड़ा हुआ है। धर्म ग्रंथों में इसे चंद्रमा की सवारी भी कहा गया है। यह प्राणी आंध्रप्रदेश एवं तेलंगाना के राज्य पशु के रूप में घोषणा की गयी है।

यह बिहार के बक्सर जिले से 10कि. मी. की दूरी पर पर चुन्नी लाल, हकीमपुर, पवनी कमलपुर स्थान पर बहुतायत में पाया जाता है। कभी-कभी सासाराम से भी इनके मिलने की सूचना मिली है। इसका कद-काठी काफी गठीला होता है तथा दौडने में काफी तेज होता है एवं लंबी छलांग भी लगाता है। ये लगभग 80कि.मी.प्रति घंटा के रफ्तार से दौड भी सकता हैं। घास मुख्य चारा है। इसे प्रतिदिन पीने का पानी चाहिए, इसलिए बक्सर में गंगा के किनारे या खेतों में पटवन के लिए चलते मोटर से पानी पीते देखा गया है। कहीं-कहीं गढ्ढे में भी जमा पानी पी लेता है। आज भारत में इसकी संख्या लगभग 50 हजार है। नेपाल में 2008 के वर्ष में इनकी संख्या 184 है। भारत एवं पाकिस्तान के बोर्डर पर यह अक्सर घुमते हुए पाए जाते हैं। कभी कभी सुरक्षा बलों द्वारा इसे पकड़ कर स्थानीय लाल सुहानरा राष्ट्रीय उद्यान में रखे जाते हैं जिसे बाद में प्रकृति में वन विभाग के लोग छोड़ देते हैं।

सिंग सिर्फ नर में होता है, मादा में नहीं। नर और मादा के अलग-अलग रंग के होते हैं। नर में ऊपरी शरीर का रंग काला (या गाढ़ा भूरा) होता है तथा नीचे का शरीर का रंग और आँख के चारों तरफ सफेद होता है। मादा के पूरे शरीर, हल्के भूरे रंग की होती है तथा पेट और अंदरुनी टागें सफेद होती है। मादा में पीठ के दोनों तरफ बगल से एक उजाला लकीर (लैटरल बैंड) जैसी आकृति होती है ।

इसकी लम्बाई 100 से 150 सेंटी मीटर तक होती है। कंधे तक ऊँचाई-60-85 से.मी., पूँछ की लंबाई-10-17 से.मी. तथा वजन-26-35 कि.ग्रा. तक होती है। इसके सींग में छल्लों जैसे उभार होते हैं। इसके सींग पेंचदार होते हैं, जिनके 1-4 घुमाव होते हैं। अमूमन 4 घुमाव पाये जाते हैं। सींगों की लंबाई 80 से.मी. तक होती है। पूंछ छोटा एवं दबा हुआ होता है। आई. यु. सी. एन. ने 2003 में इस प्राणी को संकटग्रस्त (near threatened) प्राणी की श्रेणी में रखा है तथा भारत में वन्य जीव संरक्षण अधिनियम-1972 में संरक्षित प्राणियों की श्रेणी में रखा गया है।

● डा. गोपाल शर्मा

वर्ष - 1, अंक-4, दिसम्बर 2014

गौरैया

पर्यावरण एवं वन विभाग का मासिक मुखपत्र

संरक्षक

श्री पी.के.शाही

मंत्री, पर्यावरण एवं वन विभाग, बिहार

प्रधान सम्पादक

विवेक कुमार सिंह

सम्पादक

बी.ए.खान

कार्यकारी सम्पादक

विनोद अनुपम

सम्पादक मंडल

एस.एस.चौधरी

भारत ज्योति

ए.के.प्रसाद

पी. के.जायसवाल

मिहिर कुमार झा

संपर्क

शोध प्रशिक्षण एवं जन संपर्क प्रमंडल

संयुक्त भवन, नेहरू नगर, पटना

email-dfortpd@gmail.com

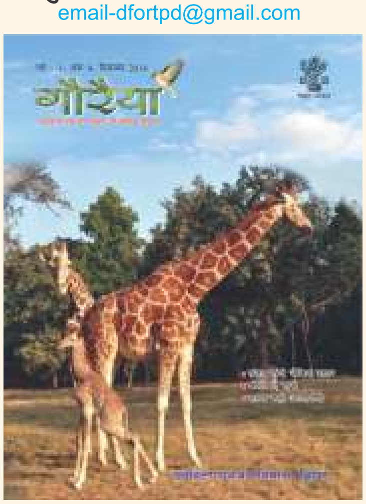

प्रधान संपादक की कलम से...

पर्यटन का एक सहज सा अर्थ था हमारे लिए- 'वहां' की संस्कृति, 'वहां' की जलवायु, 'वहां' के प्राकृतिक सौन्दर्य से रू-ब-रू होना। लम्बी यात्रा से लौटकर अकसर लोग अपनी छींकों का अहसास गर्व से कराते थे; यह कहते हुए कि कई जगह का पानी पीना पड़ा न , लगता है सर्दी लग गई। पानी सिर्फ प्यास बुझाने का जरिया भर नहीं होती थी, यह वहां के वातावरण से जुड़ने का माध्यम होती थी। बोतल बंद पानी की आदि हो चुकी पीढ़ी को शायद इसका अहसास नहीं हो कि पानी की स्वादहीनता का स्वाद भी स्थान के अनुसार बदलता रहता है। खारा-मीठा, पाच्य-सुपाच्य तो एक मोटा-मोटी वर्गीकरण है। एक बारीक सा फर्क तो पड़ोस के पानी में भी महसूस किया जा सकता है। कहा जाता है पानी में स्थान विशेष के स्वभाव को नियंत्रित रखने की भी ताकत होती है। वास्तव में पानी स्वादहीन भले ही होता हो, भावहीन नहीं। बोतल बंद पानी स्वादहीन भी है, भावहीन भी है।

लोकप्रिय कहावत है पांच कोस पर पानी बदले, सात कोस पर वाणी। अब पांच-सात कोस की बात नहीं। पांच-सात हजार कोस जाने के बाद भी पानी के बदलने की गुंजाइश नहीं रहती। कन्या कुमारी से लेकर कश्मीर तक आप चाहेंगे तो सिर्फ एक स्वाद का पानी पीते रह सकते हैं। शायद यदि न भी चाहें तब भी। क्योंकि पानी की स्थानीय उपलब्धता के प्रति आपको इस कदर भयभीत कर दिया गया है कि आप उसे ग्रहण करने का जोखिम नहीं उठाना चाहते। रेलवे प्लेटफार्मों पर जहां गाड़ी लगते ही डब्बे लेकर पानी के लिए नल के पास तक दौड़ना भारतीय संस्कृति की एक सहज पहचान थी, अब प्यास लगने के पहले ही बोतल बंद पानी आपकी आंखों के सामने होता है।

शुद्धता के प्रति आज हमें सचेत नहीं किया जा रहा, भयभीत किया जा रहा है। यह भय हमें एक खतरे से बचा भले ही रही हो, लेकिन निश्चित रूप से भय और अविश्वास के एक बड़े खतरे की ओर धकेल रही है, जब हम अपने पर ही अविश्वास करने लगते हैं। हमारी सारी समझ कुंद पड़ जाती है। हम मान लेते हैं कि सामने बह रहे पानी में स्वाइन फ्लु से लेकर पोलियो और कैंसर तक के वाइरस हैं, जबकि बोतल बंद पानी पूर्णतया सुरक्षित। हम अपने तात्कालिक भय से भयभीत हो इस भय को भी नजर अंदाज कर देते हैं कि क्या इस बोतल के पानी में कीटनाशकों की मात्रा सुरक्षित सीमा में है। यह तो कतई नहीं सोचते कि प्लास्टिक की इन बोतलों का खड़ा हो रहा अम्बार कल हमारे सांस लेने भी मुश्किल कर देगा। पैसिफिक इंस्टीटयूट का शोध कहता है कि अमरीकी जितना मिनरल वाटर पीता है उसका बाटल बनाने के लिए 20 मिलियन बैरल पेट्रो उत्पादों को खर्च किया जाता है। एक टन बाटल तीन टन कार्बन डाईआक्साईड का उत्सर्जन करता है। इस तरह 2006 में खोजबीन के जो आंकड़े सामने आए हैं, उससे पता चलता है कि अमरीकियों ने पानी पीकर 250 मिलियन टन कार्बन उत्सर्जन कर दिया। इतना ही नहीं, दुनिया भर में पानी को बेचने के लिए जितना प्लास्टिक उपयोग किया जाता है, उसका नब्बे फीसदी बिना रिसाइक्लिंग के जमीन पर फेंक दिया जाता है जो सिर्फ मिट्टी की उपज नहीं, पूरे पर्यावरण को प्रदूषित करती है।

कतई आश्चर्य कि बोतलबंद पानी अभी भी हमारे विमर्श से बाहर है। हमारी कोशिश है जिस तरह प्लास्टिक बैग के खिलाफ जागरुकता की कोशिशें चल रही हैं, उसी तरह बोतल बंद पानी की समस्या को भी हम महसूस करें और विमर्श के लिए आगे बढें।

गौरैया के इस अंक में कांवर झील पक्षी अभयारण्य से आप रु-ब-रु होंगे। इसे एशिया का सबसे बडा वेटलैंड एरिया माना जाता है। नए वर्ष जश्न में संजयगांधी जैविक उद्यान पटना के आकर्षण का केन्द्र रहता है।आपके स्वागत के लिए जैविक उद्यान में भी तैयारियां चल रही हैं, जिनकी झलकियां इस अंक में आप देख सकते हैं।

शुभकामनाओं के साथ

विवेक

(विवेक कुमार सिंह)

प्रधान सचिव

पर्यावरण एवं वन विभाग,बिहार

बोतलबंद पानी : भविष्य के लिए खतरा

अगली बार जब आप बोतलबंद पानी खरीदें, तो थोड़ा रुककर सोचें, एक लीटर बोतलबंद पानी के लिए 15 रुपये खर्च करने में आपको कोई परेशानी नहीं है। लेकिन जो बात आप महसूस नहीं करते और इसीलिए आपको सोचने की जरूरत है कि एक लीटर टैप वाटर के मुकाबले बोतलबंद पानी पर आप 4200 गुना ज्यादा खर्च करते हैं। बोतलबंद पानी और पेय पदार्थ निर्माता कंपनियां एक हजार लीटर भूमिगत जल निकालने के एवज में सिर्फ 30 पैसे का उपकर चुका रही हैं। विडंबना देखिए कि मध्य वर्ग के वही लोग, जो बोतलबंद पानी खरीदते हैं, दिल्ली जल बोर्ड द्वारा पानी की कीमतों में सामान्य बढ़ोतरी का भी विरोध करते हैं। दिल्ली जल बोर्ड 1000 लीटर पानी के लिए साढ़े तीन रुपये चार्ज करता है। एक पैसे में तीन लीटर पानी। फिर भी लोगों को लगता है कि टैप वाटर की कीमत बढ़ाना उनके साथ अन्याय है। ऐसे लोग घर पर लगभग मुफ्त में पानी की सुविधा चाहते हैं। वे सोचते हैं कि यह उनका मूल अधिकार है और पानी की कीमतों में कोई इजाफा उनके इस अधिकार में हस्तक्षेप है। लेकिन घर से निकलते ही उन्हें अपनी प्यास बुझाने के लिए जेब हलकी करनी पड़ती है। तामझाम वाले रेस्तरां में तो उन्हें बोतलबंद पानी की सामान्य से ज्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। लेकिन कोई सवाल नहीं पूछता है। विरोध का तो सवाल ही नहीं पैदा होता है।

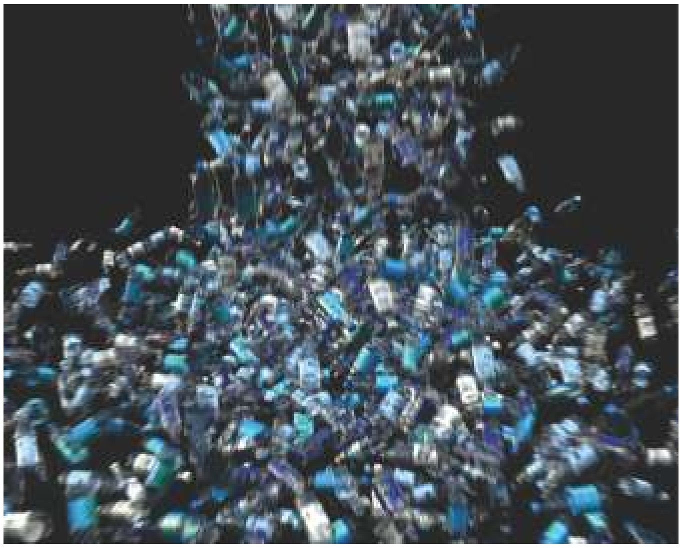

मैंने किसी को बोतलबंद पानी की अत्यधिक कीमत के औचित्य पर बहस करते नहीं देखा है। उपभोक्ताओं के लिए जब पानी की कीमत कोई मायने नहीं रखती है, तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसके व्यवसाय में दिन-दुनी रात-चौगुनी प्रगति होना आश्चर्य की बात नहीं है। वर्ष 2004 में पूरी दुनिया में 154 अरब लीटर पानी की खपत हुई। इसमें हमारा हिस्सा 5.1 अरब लीटर था। बोतलबंद पानी का बाजार कितना बड़ा हो गया है, इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि दिल्ली के आसपास बसे नोएडा और गाजियाबाद में एक दिन में 75 हजार लीटर पानी की खपत है, जिस पर 11.25 लाख रुपये खर्च किए जा रहे हैं। दिल्ली की ही तरह देश के दूसरे हिस्सों में भी बोतलबंद पानी की खपत तेजी से बढ़ रही है। सालाना 40 फीसदी की दर से बढ़ रहा 1800 करोड़ रुपये का यह व्यवसाय अप्रत्याशित बूम दिख रहा है। 1999 से 2004 के बीच पांच साल के अल्प समय में यहां बोतलबंद पानी की खपत में लगभग पांच गुनी बढ़ोतरी हुई है। इस मामले में हम अब दुनिया के पांच बड़े देशों में शामिल हैं।

कहना न होगा कि इसके लिए टैप वाटर की क्वालिटी जिम्मेदार है। हालांकि यह सच है कि हमारी नगरपालिकाओं के पास संसाधनों की भारी कमी है। लेकिन टैप वाटर की क्वालिटी को फिल्टर वाटर के समकक्ष लाया जा सकता है, बशर्ते उपभोक्ता उसके लिए ज्यादा कीमत चुकाने को तैयार हों। अगर हम तीन लीटर पानी के लिए एक पैसा खर्च कर रहे हैं, तो हमें टैप वाटर की क्वालिटी के बारे में शिकायत करने का कोई तुक नहीं है। पानी का प्रबंधन निजी हाथों में सौंपने के बजाय ज्यादा से ज्यादा सार्वजनिक निवेश करने की कोशिश होनी चाहिए। सुरक्षित टैप वाटर की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए आमदनी के स्तर के अनुसार पानी की कीमत वसूली जा सकती है।

अगर आप सोचते हैं कि एक लीटर पानी के लिए 15 रुपये खर्च कर आप सुरक्षित हैं, तो इस पर पुनर्विचार करने का समय आ गया है। अमेरिका में भी फूड ऐंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन के कड़े मानकों के बावजूद 40 फीसदी बोतलबंद पानी असुरक्षित होता है। यहां भी स्थिति ज्यादा बेहतर नहीं है। कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि अकसर बोतलबंद पानी निर्धारित मानकों पर खरे नहीं उतरता है। अमेरिका में कई राज्यों में बोतलबंद पानी के लिए कोई कानून ही नहीं है। यहां भी भारतीय मानक ब्यूरो के पास बोतलबंद पानी की जांच की कोई व्यवस्था नहीं है। अमेरिका हो या भारत, क्वालिटी और शुद्धता के नाम पर आप जो कुछ भी खरीद रहे हैं, वह सिर्फ अपना भरोसा है। इससे भी ज्यादा दुखद यह है कि एक ऐसे समय में जब पानी एक राजनीतिक मुद्दा बनता जा रहा है और कई लोगों का मानना है कि अगला विश्व युद्ध पानी की खातिर लड़ा जाएगा, बोतलबंद पानी उद्योग तेजी से हमें उस ओर ले जा रहा है।

एक लीटर बोतलबंद पानी तैयार करने में पांच लीटर पानी खर्च होता है। इस तरह 2004 में 154 अरब लीटर बोतलबंद पानी के लिए 770 अरब लीटर पानी का उपयोग किया गया था। अपने देश में इस प्रक्रिया में 25.5 अरब लीटर पानी व्यर्थ में बहा दिया गया। किसी भी नजरिए से देखा जाए, तो यह पानी की भारी बर्बादी है। इसकी वजह से कई जगह भूमिगत जल चिंताजनक स्तर तक नीचे चला गया है। केरल के प्लाचीमाड़ा गांव के निवासियों द्वारा भूमिगत जल के अंधाधुंध दोहन के खिलाफ चलाए

गए आंदोलन से प्रेरित होकर देश के कई इलाकों में इस तरह के विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। भूमिगत जल का दोहन विस्फोटक मसला बनता जा रहा है। बोतलबंद पानी के कारण पर्यावरण को भी नुकसान हो रहा है। कैलिफोर्निया स्थित पेसिफिक इंस्टीटच्यूट के अनुसार 2004 में अमेरिका में 26 अरब लीटर पानी की पैकिंग के लिए प्लास्टिक की बोतलें बनाने के लिए दो करोड़ बैरल तेल का इस्तेमाल किया गया। प्लास्टिक की वही बोतलें कूड़े के ढेर पर पहुंचती हैं तो भूमिगत जल को प्रदूषित करने के साथ ग्लोबल वार्मिंग का भी सबब बनती हैं।

क्या उम्मीद की कोई किरण नजर आ रही है? क्या लोग बोतलबंद पानी के कारण हो रहे नुकसान के प्रति सचेत हो रहे हैं? हां, ज्यादा से ज्यादा लोग जागरूक हो रहे हैं। अमेरिका में कई रेस्तराओं और होटलों में फिल्टर किए गए पानी की सप्लाई की जा रही है। उनमें से कइयों ने तो बोतलबंद पानी रखना ही छोड़ दिया है। हमारे देश के बड़े रेस्तराओं और पांचसितारा होटलों को भी यह काम शुरू कर देना चाहिए। शहरी संस्थाएं भी जाग

रही हैं। सान फ्रांसिस्को के मेयर गेविन न्यूसम ने हाल ही में आदेश जारी किया है कि टैप वाटर उपलब्ध होने की स्थिति में बोतलबंद पानी का इस्तेमाल न किया जाए। उनकी दलील यह है कि एक लीटर बोतलबंद पानी की कीमत पर आप 1000 लीटर टैप वाटर खरीद सकते हैं। इससे पहले साल्ट लेक सिटी के मेयर भी ऐसा ही आदेश जारी कर चुके हैं। क्या भारत में भी ऐसा ही अभियान चलाए जाने का समय नहीं आ गया है?

देविंदर शर्मा
(इंडिया वाटर पोर्टल से साभार)

विभाग ने लगायी रोक

बोतलबंद पानी और उससे उत्पन्न खतरों की गंभीरता को महसूस करते हुए पर्यावरण एवं वन विभाग,बिहार द्वारा अपने आयोजनों में इस पर पूर्णत: रोक लगाने की पहल की है।पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव विवेक कुमार सिंह के हस्ताक्षर से जारी पत्र में कहा गया है कि पर्यावरण के हित को ध्यान मे रखते हुए विभागीय बैठकों में पेट बोतलों का इस्तेमाल नहीं किया जाए।उसके स्थान पर फ्लास्क एवं शीशा या स्टील के ग्लास का उपयोग किया जाय। इसका अनुपालन क्षेत्रीय स्तर पर भी सुनिश्चित करने का अनुरोध किया गया है।

प्रधान मुख्य वन संरक्षक को संबोधित पत्र में पर्यावरण पर पेट बोतलों के प्रभाव का भी विस्तार से उल्लेख है। पत्र के अनुसार बढती जनसंख्या एवं बदलती जीवन शैली के कारण पर्यावरण पर अत्यधिक दवाब पड़ रहा है।आम जिन्दगी में इस्तेमाल होने वाले कतिपय ऐसे नान बायो डिग्रेडिबल उत्पाद हैं, जिनका उपयोग पर्यावरण के लिए एक बहुत बडी चुनौती बन चुका है। 40 माइक्रोन से कम मोटाई के प्लास्टिक थैलों पर तो वैधानिक रूप से प्रतिबंध लगाया जा चुका है, किन्तु पेट बोतलों का उपयोग अभी भी धड़ल्ले से जारी है, जिसे सीमित किया जाना पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से अत्यावश्यक है।

पेट बोतलों से होने वाली हानि का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि इसके निर्माण में Biospheol ।(BPA) रसायन का प्रयोग होता है,जो मानव ग्रंथियों के लिए नुकसानदेह है। एक पेट बोतल के निर्माण में 6कि.ग्रा.कार्बन डाई आक्साइड का उत्सर्जन वायुमंडल में होता है,तथा तकरीबन 5 लीटर पानी का अलग से प्रयोग होता है।निश्चित रूप से आने वाले दिनों में पर्यावरण के लिए बडे खतरे के कारण बन सकते हैं।

पत्र में आगे बताया गया है कि विश्व के कुल तेल खपत का लगभग 6 प्रतिशत सिर्फ प्लास्टिक निर्माण में होता है। प्लास्टिक बोतलों से संबंधित कचरे के कारण उत्पन्न खतरे के बारे में पत्र में कहा गया है कि कुल कचरे का 4-5प्रतिशत प्लास्टिक होता है।यही कचरा नालियों में इकट्ठा होता है,जो सीवेज में अवरोध पैदा करता है। इसके एक और महत्वपूर्ण खतरे के बारे में पत्र में सचेत करते हुए लिखा गया है कि पेट बोतलों के ढक्कन रिसाइकिल नहीं हो पाते,एवं इसे जानवरों के द्वारा खा लिए जाने से उनके जान का खतरा रहता है। प्रत्येक वर्ष प्लास्टिक खाने के कारण 10 लाख से भी अधिक पशु,पक्षियों मछलियों की मृत्यु होती है।

पत्र में जोर देकर कहा गया है कि एक पेट बोतल का वजन औसतन 30ग्राम होता है।अगर 100व्यक्तियों की बैठक में पेट बोतल का उपयोग किया गया तो मात्र पेट बोतल 18 किग्रा कार्बन डाई आक्साइड का उत्सर्जन होगा, 3 किग्रा नान बायो डीग्रेडिबल कचरे का उत्पादन होगा तथा 500 लीटर अतिरिक्त पानी का अनावश्यक व्यय होगा।

इन कारणों के परिप्रेक्ष्य में पेट बोतलों को मनुष्य के लिए आर्थिक,स्वास्थ्य एवं पर्यावरण कारणों से हानिकारक बताते हुए इसके विकल्प के लिए विभाग को प्रेरित करने की कोशिश वास्तव में एक सकारात्मक शुरुआत मानी जा सकती है।

चारागाह विकास हेतु प्रशिक्षण

वन्यप्रणियों के अधिवास एवं उपलब्ध चारागाह में हो रही कमी को दूर करने के लिए पर्यावरण एवं वन विभाग प्रयासरत है। पर्यावरण एवं वन विभाग वन्यप्राणियों के लिए चारागाह की कमी को दूर करने के उद्देश्य से क्षेत्रीय कर्मियों को प्रशिक्षित करने का निर्णय लिया है ताकि वे प्रशिक्षणोपरांत अपने-अपने कार्य-क्षेत्रों में चारागाह विकसित कर सकें।

वनों पर बढ़ते पशु दवाब एवं मानवजनित समस्याओं के कारण जंगलों में वन्यप्राणियों के चारागाह के क्षेत्र में निरंतर कमी होती जा रही है। जंगल के किनारे के गांव में रहने वाले लोग बड़े पैमाने पर अनुत्पादक मवेशी पाल रखे हैं, इन मवेशियों को खिलाने के लिए ग्रामीण पूर्णरूपेण जंगल पर ही निर्भर रहते हैं। प्रतिदिन सुबह मवेशियों को वो जंगल में हांक कर पहुंचा देते हैं। दिन भर ये मवेशी वन्यप्राणियों के चारागाह को अपने खुरों से रौंदकर एवं चराई कर वन्यप्रणियों के लिए चारा का संकट खड़ा कर देते हैं।

गर्मी के दिनों में वन्यप्राणियों के लिए चारा की विकट समस्या तब उत्पन्न हो जाती है जब ग्रामीण नया घास लाने के उद्देश्य से चारागाह वाले क्षेत्र में आग लगा देते हैं। आग लगाए जाने से जंगलों का लगभग सम्पूर्ण चारागाह का क्षेत्र नष्ट हो जाता है। इस विकट समय में वन्यप्राणी चारा के लिए चारा की खोज में जंगल से भटक कर गांवों की ओर रुख कर लेते हैं, जिस कारण उनका शिकार हो जाता है।

वन्यप्राणियों के घटते चारागाह से निजात पाने, उत्तम चारा सुलभ ढंग से प्राप्त करने, विभिन्न प्रकार के वन्यप्राणियों हेतु अलग-अलग प्रजाति के चारागाह लगाने एवं नई तकनीक की जानकारी प्राप्त करने के लिए पर्यावरण एवं वन विभाग अपने 25 वन पदाधिकारियों को भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधाान संस्थान, झांसी में खास तौर से प्रशिक्षित कराया गया है, ताकि राज्य में चरागाह की समस्या का वैज्ञानिक और समुचित समाधान प्राप्त हो सके।

मोबाईल एप्स से मिलेगी वनरोपण की जानकारी

पर्यावरण एवं वन विभाग में किये जाने वाले कार्यों को और अधिक सुचारु एवं पारदर्शी रूप से करने के उद्देश्य से कम्प्यूटर आधारित सूचना प्रणाली का उपयोग जा रहा है। इस दिशा में NIC, बिहार के माध्यम से कार्य प्रारम्भ किया गया है। सर्वप्रथम विभागीय मानचित्रों के डिजिटाईजेशन का कार्य 1: 50000 के स्केल पर किया गया है। इस कार्य को करने हेतु विभाग में उपलब्ध मानचित्रों तथा सरकार द्वारा समय-समय पर निर्गत तत्संबंधी अधिसूचनाओं का उपयोग किया गया है। प्रथम चरण में प्रमण्डल, रेंज, बीट, सब-बीट, सुरक्षित/आरक्षित वन, आश्रयणी, टाईगर रिजर्व, उनके Eco-Sensitive Zone आदि का डिजिटाईजेशन कर दिया गया है तथा यह सभी सूचनाएँ विभागीय बेबसाईट पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध बिहार राज्य में वनावरण को कम से कम 15% तक लाने के लक्ष्य को पूरा करने के लिये विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत वृहद वृक्षारोपण का कार्य किया जा रहा है। वनरोपण कार्य को और अधिक पारदर्शी बनाने तथा उसके अनुश्रवण को और अधिक सुदृढ़ करने के लिये सूचना एवं संचार तकनीकी (Information and Communication Technology) का उपयोग किया जा रहा है। राज्य में कृषि वानिकी की सफलता में पौधशालाओं का बहुत बड़ा योगदान है। पौधशालाओं के समुचित प्रबंधन तथा पौधशालाओं में विभिन्न प्रजाति के पौधों की उपलब्धता की जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराने हेतु ई-नर्सरी सॉफ्टवेयर को NIC के माध्यम से तैयार कर उसका उपयोग विभाग में प्रारम्भ किया गया है। इस साफ्टवेयर के माध्यम से जो भी कृषक पौधा रोपण करना चाहते हैं, वह अपना पंजीकरण कर सकते हैं। इस सॉफ्टवेयर के माधयम से विभिन्न पौधशालाओं में पौधों की उपलब्धता तथा कृषकों को उनकी आवश्यकतानुसार उनके वितरण का अनुश्रवण किया जा रहा है।

इसके पश्चात् राज्य में किये जा रहे वनरोपण को और अधिक सुचारु एवं पारदर्शी रूप से करने तथा उनके प्रभावी अनुश्रवण करने हेतु प्रक्षेत्र स्तर तक सभी पदाधिकारियों को Android मोबाईल फोन उपलबध करा दिये गये हैं तथा वनरोपण के आंकड़ों को रिकॉड करने के लिए एक मोबाईल App राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केन्द्र (NIC) बिहार के द्वारा विकसित किया गया है।

जिससे सभी पौधशालाओं की सूचना वनरोपण क्षेत्रों की भांति Android मोबाईल फोन के द्वारा अपलोड की जा सकेगी जो विभागीय वेबसाईट पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध हो जायेगी।

पी.के.जायसवाल, वन प्रमंडल पदाधिकारी

संजय गांधी जैविक उद्यान

नये साल के लिए तैयार

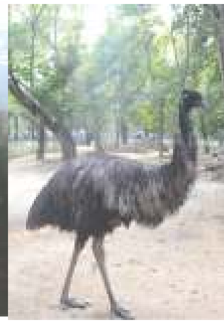

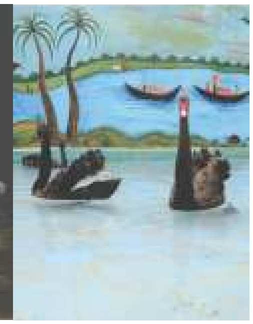

संजय गांधी जैविक उद्यान के छोटे पिंजड़ों में बंद जलीय पक्षियों को 26 जनवरी को स्वतंत्रता मिलेगी। इसके लिए एक बड़ा पिंजड़ा बनाया जा रहा है। भरसक कोशिश होगी कि बड़े पिंजड़ें में पक्षियों को प्राकृतिक वातावरण मिलें। इसमें सभी पक्षियां परती और पानी में तैरती नजर आएंगी। दर्शक भी एक स्थान पर दर्जनों प्रजाति की पक्षियों को देखने का आनंद ले पाएंगे।

पक्षियों के लिए बड़े पिंजड़ें का निर्माण कार्य शुरू हो गया। निशाचर भवन के पास इसका निर्माण हो रहा है। कुल 1.54 करोड़ रुपये खर्च होंगे। बीच में 40 फीट की ऊंचाई पर जाली लगेगी, जो करीब 4 मंजिला घर तक की ऊंचाई के बराबर होगा। इस पिंजड़ें में एक साथ कई प्रजातियों के पक्षी स्वतंत्र विचरण कर सकेंगे। बीच में चार पोल होंगे। किनारे में 96 पोल लगेगा। 4200 स्क्वायर फीट में बनने जा रहा है। बीच में एक झरना लगेगा। केज के अंदर प्राकृतिक माहौल विकसित करने की तैयारी है।

पिंजड़े में विभिन्न प्रकार की कलाकृतियां भी रहेंगी। पेनिकन नामक पक्षी उड़ने के क्रम में संभोग करती है। इनका प्रजनन रुक गया है। वर्षों से इनका पर कतर कर रखा गया है। ये उड़ नहीं सकती हैं। ये भी आजाद हो जाएंगी। इससे इनके प्रजनन की उम्मीद बढ सकती है। उद्यान में रंग-बिरंगे जलीय पक्षी हैं। डक ब्राह्मणी, डक मास्कोभी, इम्राल्ड डक, कॉकटेल डक, गडवाल, गुजबार हेडेड, आईबीआइएस ब्लैक, लव वर्ड, मलाई, पिंटल स्टॉक ब्लॉक नेकेट आदि हैं। बाहर से भी जलीय पक्षियों को मांगने की तैयारी है।

इसी के साथ अब चिड़ियाघर में झील के किनारे लगे प्रकृति का भी आनंद उठाया जा सकता है। जिराफ के केज के सामने 800 स्क्वायर फुट में झील में आधा डूबा डेक बन कर तैयार हो चुका है। डेक का पिलर आधा पानी में है। इस डेक को तैयार होने में लगभग डेढ़ साल से अधिक समय लग गया है। काफी लंबे इंतजार के बाद झील के किनारे डेक का निर्माण पूरा हो गया।

गुलाब गार्डन संजय गांधी जैविक उद्यान का महत्वपूर्ण आकर्षण रहा है। नए वर्ष के जश्न को देखते हुए इसे भी नया रुप रंग दिया जा रहा है। यहां गुलाब की दर्जनों प्रजातियों के रंग-बिरंगे फूलों के पौधे लगाये गए हैं। गुलाब गार्डन में अभी फूल खिले नहीं हैं मगर पौधों को देखकर सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि दिसंबर मध्य तक इनमें गुलाब के फूल खिल जाएंगे। फिलहाल गार्डेन की सिंचाई के साथ आवश्यक देखभाल की जा रही है । गार्डेन में नेहरू और शास्त्री गुलाब भी हैं। इन दोनों में मामूली अंतर है। इसकी खासियत है कि यह सालभर खिलता रहता है तथा इसमें खुशबू अधिक होती है। लाल बहादुर शास्त्री गुलाब लाल रंग का लेकिन नेहरू गुलाब से बड़ा होता है। इसमें हल्की खुशबू होती है।अमेरिका के राष्ट्रपति रह चुके जॉन एफ केनेडी के नाम से भी एक गुलाब है। यह सफेद रंग का है। एवरेस्ट गुलाब दूध के तरह सफेद होता है। सुइया गुलाब सिंदूर की तरह लाल तो सिद्धार्थ गुलाब गुलाबी रंग पर सफेद रंग के चितकबरेपन वाला होता है। टाटा सनोटोरियम में बैंगनी पर पीले रंग का शेड होता है। डबल डिलाइट गुलाब का रंग बदलता रहता है। यह पहले गुलाबी, डार्क और अंत में लाल हो जाता है। ताजमहल गुलाबी रंग का बड़ा, गोल्डेन जेट पीला, लाडेन गुलाब बैंगनी के अलावा चाइलेंजर गुलाब, प्रियदर्शनी गुलाब, काजल गुलाब आदि है। चिड़याघर के गुलाब गार्डेन में दर्जनों वेरायटी के करीब एक हजार से अधिक पौधों के रंग-बिरंगे फूल दर्शकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं। यहां सफेद, कोमल पंखुड़ियों वाले फूलों को देखकर दर्शक मंत्रामुग्ध हो जाते हैं। यहां सफेद, लाल गुलाबी, कत्थई, बैंगनी, पीले, नारंगी, सात चितकबरे रंग के गुलाब हैं।

उम्मीद की जा रही है 20 दिनों में फूल निकल आयेंगे तथा दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र बन जाएगा गुलाब गार्डेन। गुलाब के प्रत्येक पौधे की जड़ के पास की मिट्टी को बदल दिया गया है। पौधों की पूरी देख-भाल की जा रही है ताकि स्वस्थ फूल खिल सके। अंडाकार रूप में बनाये गये गार्डेन में विभिन्न प्रजातियों के रंग-बिरंगे गुलाब के फूल लोगों के आकर्षण के केन्द्र बने रहते हैं। गुलाब गार्डेन के किनारे-किनारे ग्रिल लगायी गयी है जबकि बीच में भ्रमण के लिए एक पगडंडी बनाई गई है।

मृत्युंजय मानी

प्रवासी पक्षियों को आमंत्रित करता कांवर झील पक्षी आश्रायणी

बिहार के प्रवासी पक्षियों को आमंत्रित करने वाला खूबसूरत स्थान है, 'कांवर झील'। बेगूसराय से लगभग 25 किलोमीटर दूर प्रसिद्ध धार्मिक स्थल जयमंगलागढ़। जयमंगलागढ़ एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक केन्द्र भी है। यधपि यहां व्यवस्थित ढ़ंग से खुदाई का कार्य नहीं किया गया है, फिर भी इस स्थल से प्राप्त टेराकोटा औजारों एवं अन्य वस्तुओं से यह उत्तर शुंग काल का प्रतीत होता है। अभी हाल में कांवर क्षेत्र के बगल में हरसाईन स्तूप में बुद्धकालीन अवशेष मिलने का मामला प्रकाश में आया है जिससे इस क्षेत्र की महत्ता और भी बढ़ जाती है तथा पर्यटन के दृष्टिकोण से यह बुद्ध सर्किट का भाग बन सकता है।

जयमंगला गढ़ के चारों तरफ फैली है कांवर झील। कांवर झील का क्षेत्र 7400 हेक्टेयर में माना जाता है, कांवर झील के महत्व को देखते हुये 20 जून, 1989 को सरकार द्वारा इसे पक्षी आश्रयणी घोषित किया गया। आश्रयणी का कुल अधिसूचित क्षेत्रफल 6311.63 हे0 (15780 एकड़) हैं जिसका ज्यादा भू-भाग रैयती हैं एवं कुछ सरकारी गैर मजरूआ भूमि है। आश्रयणी का अधिसूचित क्षेत्र दस गांवों में फैला हुआ है जो निम्नवत् है:- 1. मंझौल 2. जयमंगलपुर 3. जयमंगलागढ़ 4. सकरा 5. रजौर 6. कनौसी 7. श्रीपुर एकम्बा 8. परोरा 9. नारायणपीपर 10. मनिकपुर । इस वेटलैंड का फैलाव वर्षाकाल में 18000 एकड़ के आस-पास हो जाता है जो सामान्य दिनों में 5000-8000 एकड़ रहता है। वैसे तो सालों भर विभिन्न तरह के देशी पक्षी यहाँ दिखते हैं लेकिन जाड़े के मौसम (अक्टूबर के अंत से मार्च तक) में यहां हजारों की संख्या में प्रवासी पक्षी आते हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न तरह की मछलियाँ, डवससनेब एवं वनस्पति इत्यादि इसे जैव विविधता प्रदान करते हैं। कांवर आश्रयणी क्षेत्र के इर्द-गिर्द 15 (पन्द्रह) गांव हैं:- मंझौल, मेहदा शाहपुर, बरियापुर, खाँजहांपुर, करोड़, सकरबासा, कुम्भी, नारायणपीपर, परोरा, एकम्बा, महेशपुर, कनौसी, मानिकपुर, रजौर तथा पहसारा। 127 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैले ये गांव कावर का मुख्य जल अधिग्रहण क्षेत्र हैं। यही वे गांव हैं जो कांवर से सीधे लाभान्वित होते हैं तथा इन्हीं ग्रामवासियों का क्रियाकलाप कावर को प्रभावित करता है। इस क्षेत्र में कोई वृहद उद्योग नहीं है जिसके कारण कांवर जल अभी तक लगभग प्रदूषण रहित है।

कांवर झील अपने स्वच्छ जल के लिए का पूरे दक्षिण एशिया में प्रसिद्ध है । प्रख्यात पक्षी वैज्ञानिक डा. सलीम अली ने इसे प्रवासी पक्षियों का स्वर्ग कहा था। 1971 में सलीम अली यहाँ आए थे और पूरा सत्र यहाँ रहकर अपना शोधकार्य पूरा किया था। उनके अनुसार इस झील में 300 प्रजातियों के पक्षियों

का अध्ययन एक साथ संभव है। वास्तव में पक्षी अवलोकन एवं शोधकार्य के दृष्टिकोण से इसे एक अनुकूलतम स्थान माना जाता है।

कांवर वेटलैण्ड मुख्यतः वर्षा जल पर आधारित पारिस्थितिक तंत्र है। कावर मुख्यताल 14 अन्य वेटलैण्ड से जुड़ा हुआ है जिससे कांवरताल को जल की प्राप्ति होती है। लेकिन लगातार हो रहे siltation एवं वर्ष 2007 में बसही के नजदीक बूढ़ी गंडक तटबंध टूट जाने के कारण कांवर के मुख्यताल को अन्य वेटलैण्ड से जोड़ने वाले चैनल लगभग बन्द हो गये हैं, जिससे मुख्यताल में पानी की कमी हो रही है। इसके बावजूद कांवर झील की उत्कृष्ट जलवायु, जैव विविधता और संतुलित आहार युक्त वातावरण की विशेषता ही है जिसके कारण हरेक वर्ष हजारों मील का सफर कर हजारों पक्षी यहाँ नियत समय पर पहुँच जाते हैं। इस झील में 106 तरह के पक्षी मिलते हैं, जिनमें से प्रवासी पक्षियों की 59 प्रजाति होती है। इन प्रवासी पक्षियों का आगमन सर्दी आरम्भ होने के साथ ही शुरु हो जाता है एवं बंसत ऋतु के समाप्त होते-होते वे अपने गंतव्य स्थान की ओर लौट जाते हैं। यहाँ मुख्यतः साइबेरिया, आलास्का, रूस-मंगोलिया के अतिरिक्त हिमालय के अन्य क्षेत्रों से भी प्रवासी पक्षी पहुँचते हैं। इनमें स्नाइप, चाहा, वेगरेल, खंजन, गीज, हंस, सारस , स्टार्क सारंग, वुज्जा आरविस की पहचान सहजता से की जाती है।

वास्तव में ये पक्षी शीत प्रदेशों के होते हैं, जहाँ वर्ष के कुछ महिनें लोगों को बर्फ के बीच गुजारने होते हैं। वहीं जलाशयों और झीलों में बर्फ जम जाती है, जिससे उन्हें भोजन की असुविधा हो जाती है। ऐसे में उनको ऐसे स्थान की तलाश होती है जहाँ शीत तो हो लोकिन बर्फ नहीं हो। कावर झील का वातावरण नवम्बर से फरवरी तक के लिए उनके लिए आदर्श होता है।

कांवर झील में मछली की 41 प्रजातियाँ, डवससनेब की 10 प्रजातियाँ एवं कई तरह के invertebrates and phyto & planktons पाये जाते है जिनकी पहचान होनी बाकी है। कांवर क्षेत्र में 140 पादप प्रजातियाँ उपलब्ध हैं। कांवर झील अपने विभिन्न तरह के फूलों और वनस्पतियों जैसे कमल, परइन, फीटमली, शैवाल की विभिन्न प्रजातियों के कारण सौंदर्य प्रेमियों को ही नहीं पक्षियों को भी आमंत्रित करती है। इसके अलावे झील में उपस्थित अन्य जंतु जैसे घोंघा, सीप, केकड़ा तथा वायु श्वासी मछलियाँ जैसे गरई, कवई, कुचिया, मांगूर की बहुतायत उनके शारीरिक वृद्धि एवं प्रजनन में सहायक होते हैं।

मीलों दूर विभिन्न मौसमों और विभिन्न झंझावतों को सहते हुए यहाँ पहुँचे ये प्रवासी पक्षी वास्तव में हमारे अतिथि हीं नहीं, हमारे मित्र भी होते हैं। किसानों के लिए इनका आगमन शुभ होता है। ये हानिकारक कीड़ों को खाकर फसलों की रक्षा करते हैं तथा संक्रामक बीमारियों को फैलने से रोकते हैं। इनकी विष्ठा में पर्याप्त मात्रा में नाइट्रोजन रहता है जो खेतों को उपजाऊ बनाता है। ये शायद ऐसे मेहमान हैं जिनका आना हमारे घर को सौंदर्य हीं प्रदान नहीं करता, उसे समृद्ध भी बनाता है। पक्षियों के आवासन को सुदृढ़ करने एवं क्षेत्र के पारिस्थितिक तंत्र को जैव विविधता प्रदान करने के उद्देश्य से वर्ष 2011-12 में 26 हेक्टेयर क्षेत्र में 35000 पौधों का रोपण कांवर क्षेत्र में किया गया। कांवर क्षेत्र में पक्षियों की सुरक्षा हेतु गश्ती दल का गठन कर, विशेषकर जाड़े के मौसम में 6 महीने के लिए, गश्ती किया जाता है।

प्रवासी पक्षी हमारी संस्कृति के प्रतीक हैं। इनका आगमन हमारे आतिथ्य को गौरवान्वित करता है। जरुरत है इनकी रक्षा की और इनके संरक्षण की। हमने हमेशा माना है 'अतिथि देवो भवः, इनकी सुखद वापसी हमारी जवाबदेही है, ताकि ये फिर अगले मौसम में लौट सकें और इनके साथ लौटे हमारी जिंदगी में सौंदर्य और समृद्धि।

क्या आपने हॉट मॉडल केली ब्रुक का नाम सुना है? वे जितनी अपनी सुंदरता के लिए जानी जाती हैं, उतना ही अपने साईकिल प्रेम के लिए भी जानी जाती हैं।

साइक्लिंग के बारे में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहती हैं- 'मै साइक्लिंग का भरपूर आनंद उठाती हूं। मैं लोगों को बताना चाहती हूं कि यह एक आरामदायक और मजेदार साधन है। इसलिए लोगों को साइक्लिंग शुरू कर देनी चाहिए।'

अमेरिका में बोतलबंद पानी पर रोक

अमेरिका के मैसाचुसेट्स प्रांत के एक शहर में प्लास्टिक की बोतल में बंद पानी के इस्तेमाल पर रोक लगा दी गई है।

कॉकोर्ड में पारित कानून नए साल से लागू हो गया। इसमें बोतलबंद पानी के इस्तेमाल को गैर-कानूनी करार दिया गया है। बोतलबंद पानी पर पाबंदी नल के पानी के इस्तेमाल को बढ़ावा देने और वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण पर काबू करने के मकसद से लगाई गई है।

बोतलबंद पानी बेचने वालों को पहली बार चेतावनी दी जाएगी और दूसरी बार पकड़े जाने पर उन पर 25 डॉलर का जुर्माना लगेगा। इसके बाद पकड़े जाने पर जुर्माने की राशि 50 डॉलर हो जाएगी।

साइकिल चलाओ कि पैसा मिलेगा

प्रदूषण कम करने, सेहत बेहतर करने और जाम से बचने के लिए फ्रांस में साइकिल से दफ्तर जाने वालों को पैसा देने का फैसला किया है. चार किलोमीटर साइकिल चलाने पर एक यूरो मिलेगा. इससे जूस पिया जा सकता है.

परिवहन मंत्रालय की पहल पर फ्रांस की 20 कंपनियों ने यह प्रयोग शुरू किया है. इन कंपनियों में 10,000 लोग काम करते हैं. प्रयोग के तहत साइकिल से दफ्तर आने जाने वालों को 25 यूरो सेंट प्रति किलोमीटर के हिसाब से पैसा दिया जाएगा, यानी एक किलोमीटर के लिए करीब 20 रुपया.

फ्रांस के परिवहन मंत्री फ्रेडेरिक कुविलिए के मुताबिक अगर प्रयोग के अच्छे नतीजे आए तो इसे बड़े पैमाने पर शुरू किया जाएगा. फ्रांस में घर से दफ्तर की औसत दूरी 3.5 किलोमीटर है. अनुमान के मुताबिक अगर 50 फीसदी लोग भी साइकिल से दफ्तर आने लगे तो साल में 80 करोड़ किलोमीटर की साइकिल चलेगी और 20 करोड़ यूरो खर्च होंगे. फिलहाल सिर्फ 2.4 फीसदी लोग ही पैडल मारकर दफ्तर जाते हैं.

फ्रांस की राजधानी पेरिस में मार्च में प्रदूषण इतना बढ़ गया कि कारों पर कुछ दिन की पांबदी लगानी पड़ी. तीन दिन तक सार्वजनिक परिवहन मुफ्त कर दिया गया. यूरोप के दूसरे देशों में हालात ऐसे नहीं हैं. नीदरलैंड्स, डेनमार्क, जर्मनी, बेल्जियम और ब्रिटेन में काफी पहले से साइकिल के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जाता रहा है. इन देशों में अलग अलग 'बाइक टू वर्क' स्कीमें चल रही हैं. इनके तहत कार के बजाए साइकिल से दफ्तर जाने वालों को टैक्स में कुछ राहत या हर किलोमीटर के लिए भत्ता या फिर दूसरी किस्म की सुविधाएं मिलती हैं.

अमर्त्य सेन की साइकिल

हाल के वर्षों में लोगों की मानसिकता में कुछ ऐसा बदलाव आया है कि साईकिल से चलने वालों को आमतौर पर हेय दृष्टि से देखा जाने लगा है। बावजूद इसके इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री डेविड कैमरून और बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान अब भी अपने साईकिल प्रेम के लिए जाने जाते हैं। इसके साथ ही नोबेल पुरस्कार विजेता वेंकटरमण रामकृष्णन भी अपने साइकिल प्रेम के लिए विख्यात हैं। वे ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में व्याख्यान देने के लिए साइकिल पर जाना पसंद करते हैं। हाल ही में लंदन के एक संग्रहालय में वह साइकिल लगायी गयी जिसे भारत रत्न और नोबल विजेता अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन चलाया करते थे।

जन-जन का प्रिय है 'अमृतफल' अमरूद

अमरूद मात्र एक फल नहीं है बल्कि इसके कई उपयोग हैं। अमरूद स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायक होता है। इसमें विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इस फल में विटामिन ए, बी, आयरन, कार्बोहाइड्रेट और फॉस्फोरस भी पाए जाते हैं। अंग्रेजी में अमरूद को Guava कहते हैं, जबकि इसका वैज्ञानिक नाम सीडियम ग्वायवा है। अमरूद शब्द संस्कृत के 'अमरूद्ध' शब्द से लिया गया है। अमरूद का पेड़ तीन से दस मीटर तक ऊंचा होता है तथा यह बारहों महीने हराभरा नजर आता है। हालांकि इसके लिए गर्म तथा शुष्क जलवायु सबसे अधिक उपयुक्त है। अमरूद के पेड़ का तना काफी पतला होता है। यह फल गोल या हल्का लंबे आकार का होता है। कहते हैं कि अमरूद का अस्तित्व दो हजार साल पुराना है पर आयुर्वेद में अमृतफल के नाम से इसका उल्लेख इससे भी हजारों साल पहले हो चुका है।

स्वाद में लाजवाब अमरूद स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उपयोगी फल है। अमरूद का रासायनिक विवेचन किया जाय तो 100 ग्राम अमरूद हमें प्रचुर मात्रा में फास्फोरस व पोटेशियम देने के साथ 152 मिलीग्राम विटामिन सी, 7 ग्राम रेसे,33 मिलीग्राम कैल्सियम,1 मिलीग्राम आयरन प्रदान करता है। अमरूद का प्रत्येक अंग आयुर्वेदिक दवा में काम आता है। खाना खाने से पहले अमरूद के नियमित सेवन से कब्ज की शिकायत नहीं होती है। वहीं यह पेट दर्द, बवासीर, सूखी खांसी, दांतों का दर्द, मलेरिया,मस्तिष्क विकार एवं रक्तचाप जैसे रोगों में काफी फायदेमंद साबित होता है। अमरूद के बीज को खूब चबा-चबा कर खाने से शरीर में आयरन की कमी दूर होती है। सिर्फ फल ही नहीं, बल्कि इसकी पत्तियां भी स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हैं। अमरूद के पेड़ के कोमल 50 ग्राम पत्तियों को पीस पानी में मिला दें, फिर इसे छानकर पीने के पेट दर्द में लाभ होगा। चमकती-दमकती त्वचा के लिए भी यह फायदेमंद है क्योंकि अमरूद में विटामिन ए,बी,व सी के साथ पोटेशियम भी प्रचुर मात्रा में मिलती है।अमरुद को पीसकर अगर चहरे पर लगाया जाए तो स्किन के दाग धब्बे तो दूर होंगे ही, साथ ही त्वचा का भी निखार आएगा। मसूड़े व सांस के मरीजों के लिए इसकी पत्तियाँ चबाने से मसूड़े तो ताकतवर होंगे ही, साथ ही साँस की ताजगी आएगी।

बीज निकालकर अमरूद के बारिक-बारिक टुकडे शक्कर के साथ धीमी आंच पर बनाई हुई चटनी हृदय के लिए अत्यंत हितकारी होती है। अमरूद रक्त में कोलेस्ट्राल की मात्रा को संतुलित बनाए रखता है।यह रक्त का प्रवाह शरीर में बना रहे, इसमें भी महत्वपूर्ण सहयोग करता है।आयुर्वेद के अनुसार अमरूद कसैला, मधुर, खट्टा, तीक्ष्ण, बलवर्धक, उन्मादनाशक, त्रिदोषनाशक और बेहोशी को नष्ट करने वाला है। बच्चों के लिए भी यह पौष्टिक व संतुलित आहार है। अमरूद से स्नायु-मंडल, पाचन, हृदय तथा दिमाग को बल मिलता है। अमरूद भारत के अलावा भी कई देशों में उगाया जाता है। लेकिन भारत की जलवायु में यह इतना घुलमिल गया कि इसकी खेती यहां अत्यंत सफलतापूर्वक की जाती है। ठंड ऋतु में तो इसके अत्यधिक पैदावार के कारण यह काफी सस्ता मिलता है। लिहाजा, इसे गरीबों का प्रमुख फल भी कहा जाता है। भारत में अमरूद की प्रसिद्ध किस्में इलाहाबादी सफेदा, लाल गूदेवाला, चित्तीदार, करेला, बेदाना तथा अमरूद सेब हैं।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि समस्त रोगों का मूल होता है पेट और अमरूद में पेट के समस्त विकारों को दूर करने की अद्‌भुत शक्ति होती है। इसलिए इसे अमृतफल भी कहा जाता है। अमरूद के वृक्ष की विशेषता है कि यह भारत में हर प्रकार की जलवायु व मिट्टी में पैदा किया जा सकता है। यह लगभग पूरे वर्ष फल देता है। अब जब अमरूद खायें तो उस पेड़ की अनिवार्यता अवश्य याद करें जिसके होने से अमरूद जैसा अमृत फल हमें प्राप्त हो रहा है।

● नीति सुधा

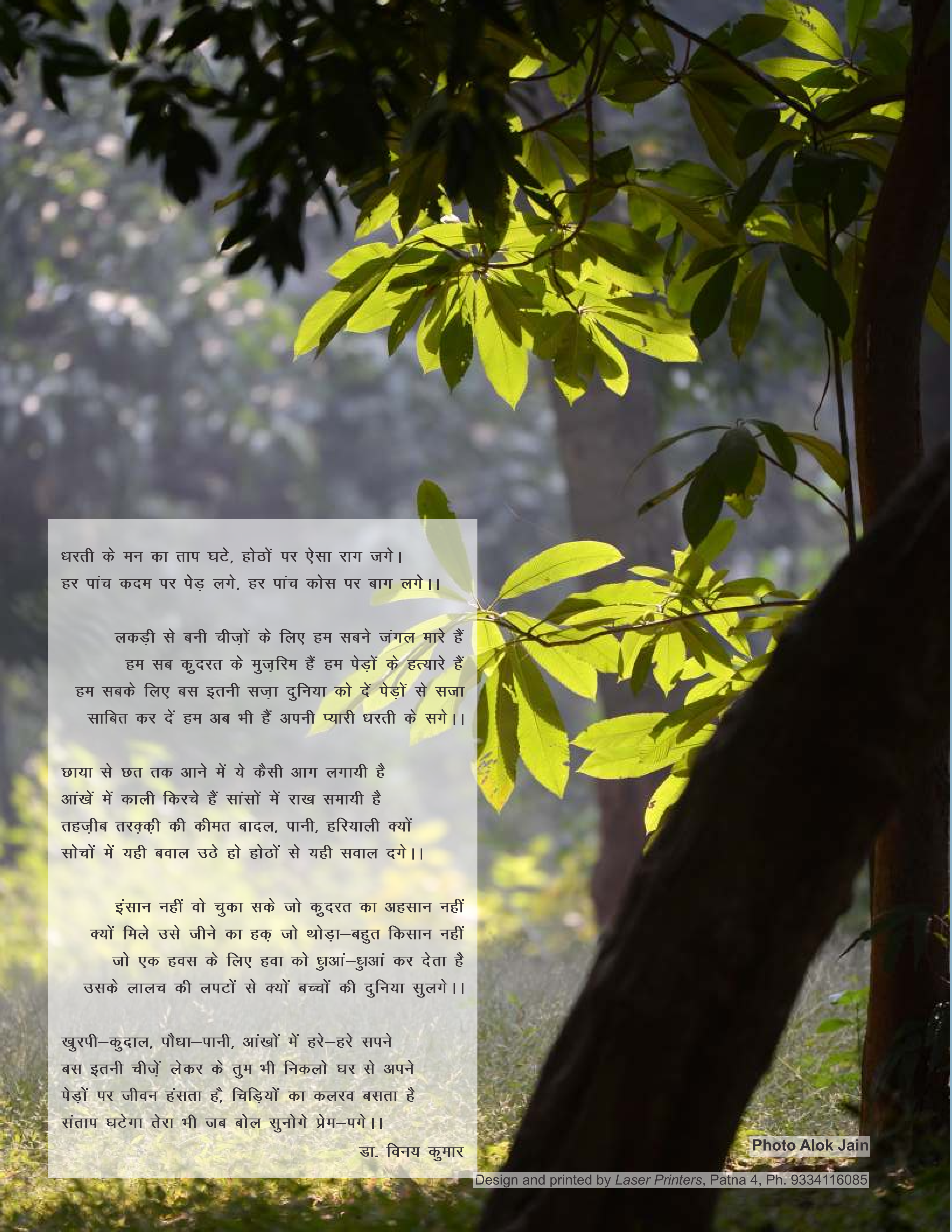

धरती के मन का ताप घटे, होठों पर ऐसा राग जगे।
हर पांच कदम पर पेड़ लगे, हर पांच कोस पर बाग लगे।।

लकड़ी से बनी चीज़ों के लिए हम सबने जंगल मारे हैं
हम सब क़ुदरत के मुज़रिम हैं हम पेड़ों के हत्यारे हैं
हम सबके लिए बस इतनी सज़ा दुनिया को दें पेड़ों से सजा
साबित कर दें हम अब भी हैं अपनी प्यारी धरती के सगे।।

छाया से छत तक आने में ये कैसी आग लगायी है
आंखें में काली किरचे हैं सांसों में राख समायी है
तहज़ीब तरक़्क़ी की कीमत बादल, पानी, हरियाली क्यों
सोचों में यही बवाल उठे हो होठों से यही सवाल दगे।।

इंसान नहीं वो चुका सके जो क़ुदरत का अहसान नहीं
क्यों मिले उसे जीने का हक़ जो थोड़ा–बहुत किसान नहीं
जो एक हवस के लिए हवा को धुआं–धुआं कर देता है
उसके लालच की लपटों से क्यों बच्चों की दुनिया सुलगे।।

खुरपी–कुदाल, पौधा–पानी, आंखों में हरे–हरे सपने
बस इतनी चीज़ें लेकर के तुम भी निकलो घर से अपने
पेड़ों पर जीवन हंसता है, चिड़ियों का कलरव बसता है
संताप घटेगा तेरा भी जब बोल सुनोगे प्रेम–पगे।।

डा. विनय कुमार

Photo Alok Jain

Design and printed by *Laser Printers*, Patna 4, Ph. 9334116085